नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

# दरभंगा के वाद्य निर्माता मोहन लाल शर्मा का तंत्री वाद्यों के निर्माण में योगदान

**डॉ. सारिका पटेल**
संगीत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

## सार-संक्षेप

*एक गायक अथवा वादक कलाकार को कला के उच्चतम पथ पर पहुँचने में कलाकार की मेहनत और लगन जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही उस कलाकार के द्वारा संगत के रूप में प्रयोग किए जाने वाले वाद्य यंत्रों की भी है। एक वाद्य निर्माता और उसका परिवार अपना संपूर्ण जीवन संगीत सेवा में समर्पित कर देता है, तब कहीं जाकर एक सुव्यवस्थित और तराशे हुए वाद्य का निर्माण होता है। इस कार्य में किसी एक वाद्य निर्माता कलाकार की भूमिका नहीं रहती बल्कि उसके साथ परिवार के कई अन्य कारीगर सदस्य भी अपना पूरा सहयोग करते हैं। कारीगरों के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा के रूप में यह कला आगे बढ़ते हुए फलीभूत होती रहती है। तंत्री वाद्यों के निर्माता थे बिहार के रहने वाले शर्मा परिवार के राधाकृष्ण शर्मा एवं मोहनलाल शर्मा जो समस्त तंत्री वाद्यों तानपुरा, सितार, सुरबहार, सरोद, गिटार, संतूर इत्यादि के निर्माण एवं मरम्मत का कार्य करते थे। राधाकृष्ण शर्मा कलकत्ता में अपने परिवार के साथ तंत्री वाद्यों के निर्माण एवं उनकी मरम्मत का कार्य करते थे। वह अपने पिता के संरक्षण में रहकर इस कार्य में दक्षता हासिल किए। तरह-तरह के तंत्री वाद्यों को बनाना इनका पेशा था। उस समय दरभंगा महाराज के दरबार में जो भी संगीत कलाकार थे, वे अपने साज-बाज की मरम्मत एवं ट्यूनिंग का काम इन्हीं के यहाँ करवाते थे। शर्मा परिवार ने तंत्री वाद्यों के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। तरह-तरह के नवीन तंत्री वाद्यों को बनाना, उसका रख-रखाब तथा पुराने वाद्यों की मरम्मत करके ये अपनी और अपने परिवार की जीविका चलाते थे। जिसकी परंपरा वर्तमान में भी चली आ रही है। साज को संजीदा करने वाले मोहनलाल अब हमारे बीच नहीं है परंतु उनकी संगीतिक सेवा, सादगीपन, उनके नेक विचार, अपने काम के प्रति समर्पित भाव हमेशा अविस्मरणीय रहेंगे। उनके जाने के बाद उनके पुत्र राजेश शर्मा इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। अपने पिता की तरह ही राजेश भी व्यवहार कुशल तथा सिद्धहस्त तंत्री वाद्यों के निर्माता है। साथ ही एक कुशल सितारवादक भी है। जो वर्तमान में पटना सिटी तथा बनारस में अपने काम को आगे बढ़ा रहे है। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्राथमिक स्रोतों को आधार बनाकर उनके जीवन एवं कार्य पद्धति का विश्लेषण किया गया है।*

**मुख्य शब्द :** वाद्य, बिहार, कोलकाता, सितार, बनारस

## शोध-पत्र

एक गायक अथवा वादक कलाकार को कला के उच्चतम पथ पर पहुँचने में कलाकार की मेहनत और लगन जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही उस कलाकार के द्वारा संगत के रूप में प्रयोग किए जाने वाले वाद्य यंत्रों की भी है। उन वाद्य यंत्रों को कलाकारों के साथ-साथ मंच तक पहुँचाने में वाद्य निर्माताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। जिस प्रकार एक संगीतकार अपना पूरा जीवन संगीत के प्रति समर्पित कर देता है, उसी प्रकार एक वाद्य निर्माता और उसका परिवार भी अपना संपूर्ण जीवन तन, मन, धन के साथ समर्पित कर देता है, तब कहीं जाकर एक सुव्यवस्थित, तराशे हुए वाद्य का निर्माण हो पाता है। इस कार्य में किसी एक वाद्य निर्माता कलाकार की भूमिका नहीं रहती बल्कि उसके साथ उसके परिवार के कई अन्य कारीगर सदस्य भी अपना पूरा सहयोग करते हैं। इन्हें एक वाद्य बनाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, साथ ही इसमें समय भी बहुत लगता है। इस कार्य को वाद्य निर्माता पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा के रूप में आगे बढ़ाते जाते है और यह कला कालांतर तक फलीभूत होती रहती है।

एक वाद्य कलाकार के साज में उसकी आत्मा बसती हैं दोनों ही एक-दूसरे के प्रतिबिंब होते हैं। हर वाद्य कलाकार अपने मन में उत्पन्न हुए भावों को अपनी कला से साज के द्वारा व्यक्त करता है। जो उस कलाकार के मन-मिजाज का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। कलाकार और उसके साज के बीच के संबंध को साकार करने का काम वाद्य निर्माताओं का होता है। जिनके अथक प्रयास से संगीत कलाकार अपनी कला साधना की गहराई तक पहुँचने में सहज हो जाता है। वाद्यों के संगत के द्वारा किए गए निरंतर अभ्यास के फलस्वरूप ही एक सफल प्रतिष्ठित कलाकार का जन्म होता है।

किसी भी विधा का संगीत कलाकार अपनी कला का प्रत्यक्ष प्रदर्शन करके आसानी से प्रसिद्धि पा लेता है। परंतु उसकी कला को उत्कृष्ट और संपूर्ण बनाने में जिस साज का प्रयोग होता है उसको बनाने वाले, उसकी मरम्मत करने, उसमें प्राण फूँककर आत्मा भरने वाले वाद्य निर्माताओं को कोई नहीं जानता। अगर कोई जानता भी है, तो उन्हें उतनी तबज्जों नहीं देता जिस कारण से ये श्रेष्ठ कलाकार गुमनामी के अंधेरों में अपना जीवन बिताते हुए इस दुनिया से चले जाते हैं। वाद्य निर्माता कठोर परिश्रम, पूरी लगन और निष्ठा के साथ काम करता है तब कहीं जाकर एक सुव्यवस्थित और तराशे हुए वाद्य का निर्माण होता है। ऐसे ही कर्तव्यनिष्ठ तंत्री वाद्यों के निर्माता थे राधाकृष्ण शर्मा एवं मोहनलाल शर्मा जो बिहार के रहने वाले थे। दोनों ही नाम शर्मा परिवार का बहुत ही जाना-पहचाना नाम है। ये समस्त तंत्री वाद्यों तानपुरा, सितार, सुरबहार, सरोद, गिटार, संतूर इत्यादि वाद्य यंत्रों के निर्माण एवं मरम्मत का कार्य करते थे।

बात उन दिनों की है जब बिहार राज्य के दरभंगा जिले में राजा-महाराजाओं का शासन चल रहा था। उसी समय एक राजा हुए कुमार लक्ष्मीश्वर सिंह इनको दरभंगा राज्य का सिंहासन बहुत ही छोटी-सी उम्र में मिल गया था। परंतु नाबालिग होने के कारण इनका राजतिलक नहीं हुआ और कोर्ट के फैसले से यह राज्य अंग्रेजों के अधीन हो गया। जब लक्ष्मीश्वर सिंह सन् 1880 ई. में बालिक हुए तो उन्होंने दरभंगा राज्य की गद्दी संभाली। तब तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने इन्हें महाराजधिराज के खिताब से नवाजा। महाराजा की मृत्यु के बाद इनके पुत्र कामेश्वर सिंह जी गद्दी पर बैठे। आधुनिकता को देखते हुए इन्होंने कई तरह की मील, समाचार पत्र तथा मासिक पत्रिका की स्थापना की। जिससे कई बेरोजगारों को रोजगार की प्राप्ति हुई। अपने पिता की तरह ही कामेश्वर सिंह भी विद्वान, संगीत प्रेमी, कला-प्रेमी, तथा विद्वानों के संरक्षक थे। उस समय दरभंगा राज्य शास्त्रीय संगीत का एक बड़ा केन्द्र बन गया था। इस राज्य में देश के कई बड़े-बड़े कलाकार अपनी कला के प्रदर्शन हेतु आते थे। तत्कालीन राज्य के नामी संगीतज्ञ दरबारी संगीतज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। जिनमें उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ, पं. रामचतुर मल्लिक, पं. रामेश्वर पाठक आदि रहे। दरबार में इन संगीतज्ञों के साथ ही संगीत वाद्य यंत्रों के कई निर्माता भी फलीभूत हुए। उन्हीं वाद्य निर्माताओं में से एक थे राधाकृष्ण शर्मा जो अपने परिवार के साथ उर्दू बाजार में स्थित अपनी दुकान में तंत्री वाद्यों के निर्माण एवं उनकी मरम्मत का कार्य करते थे। वह अपने पिता के संरक्षण में रहकर इस कार्य में दक्षता हासिल किए। तरह-तरह के तंत्री वाद्यों को बनाना इनका पेशा था। दरभंगा महाराज के दरबार में जो भी संगीत कलाकार थे, वे अपने साज-बाज की मरम्मत एवं ट्यूनिंग का काम इन्हीं के यहाँ करवाते थे। (राजेश) शर्मा परिवार ने तंत्री वाद्यों के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। तरह-तरह के नवीन तंत्री वाद्यों को बनाना, उसका रख-रखाव तथा पुराने वाद्यों की मरम्मत करना इनका पेशा था। इस तरह ये अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर जीविका चलाते थे। जिसकी परंपरा आज भी चली आ रही है।

देश की आजादी के बाद जब रजवाड़ा खत्म होने लगा तो जिस परिस्थिति का सामना गायक और वादक कलाकारों को करना पड़ा वही स्थिति वाद्य निर्माताओं के सामने भी थी। काम न होने के कारण परिवार के जीविकोपार्जन के लिए सभी कलाकार काम की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे, तब दरभंगा राज्य के कलाकार भी अन्य जगहों में पलायन करने लगे। इस दौरान राधाकृष्ण शर्मा काठमांडू चले गए और वहाँ कुछ दिन रहकर काम किए। इसके पश्चात् वे अपने परिवार के साथ कलकत्ता आ गए और यहीं आकर बस गए। कलकत्ता के गिरीश पार्क के पास इन्होंने वाद्ययंत्र की एक दुकान खोली, जहाँ ये अपने परिवार के साथ रहकर नवीन वाद्य यंत्रों के निर्माण एवं पुराने वाद्ययंत्रों की मरम्मत का कार्य करने लगे। यहाँ इनके परिवार के साथ-साथ इनके भांजे मोहनलाल शर्मा भी इनके इस कार्य में पूरा सहयोग करते थे। मोहनलाल ने तंत्री वाद्यों के निर्माण का कार्य अपने मामा से ही सीखा। लगभग 35 वर्षों तक उनके साथ रहकर कार्य करने के बाद वे पूरी तरह से प्रशिक्षित हुए। (कुमार) इसके बाद ये पटना आ गए और पटना सिटी में पादरी की हवेली के पास अपने पुस्तैनी निवास में एक छोटी सी तंत्री वाद्यों के निर्माण की एक दुकान खोली। जो वर्तमान में एक छोटे से कारखाने के रूप में स्थापित है। पटना का शायद ही ऐसा कोई संगीत प्रेमी होगा जो मोहनलाल जी को नहीं जानता होगा। ऐसे ही कुछ प्रतिष्ठित संगीत प्रेमियों के अनुभव को मैं यहाँ साझा कर रही हूँ।

आशीष कुमार चटर्जी–''मोहनलाल जी बहुत अच्छे व्यक्ति थे। काम की शिकन जरा सी भी उनके माथे पर नहीं आती थी, हमेशा हँसकर बात किया करते थे। कलाकारों का पूरा सम्मान करते थे और उनसे अपने काम का उचित दाम लेते थे। मोहनलाल जी मेरे पिता जी (स्व. अरुण कुमार चटर्जी, प्रसिद्ध सितारवादक, राधिका मोहन माइत्रा एवं मुस्ताक अली के शिष्य) के परम मित्र थे उनसे वो पारिश्रमिक न के बराबर ही लेते थे। अपने काम को पूरी ईमानदारी से साकार करते थे। मैंने उनके यहाँ से कई सितार खरीदें है और अपने शिष्यों के लिए भी मँगवाए है। (चैटर्जी)

डॉ. रीना सहाय–''मोहनलाल जी से मैंने कई बार अपने घर का और कॉलेज का साज बनवाया था। साज बाज का काम बहुत ही बारीकी से करते थे। उनसे मैं एक-दो बार ही मिली हूँ। बहुत ही खुशमिजाज व्यक्ति थे। अब तो वो नहीं है उनका बेटा उनके काम को आगे बढ़ा रहा है। वो भी अपने पिता की तरह ही व्यवहारकुशल और काम को पूरी लगन के साथ करते है। (सहाय)

डॉ. अरविंद कुमार–''जब से मैं विभाग में आया हूँ विभाग के तंत्री वाद्यों की मरम्मत के काम के लिए उन्हीं को देख रहा हूँ। जितने संजीदा वो अपने थे, उतना ही संजीदा साजों का काम भी करते थे। विभाग से वाद्यों को उनके यहाँ भिजवा दिया जाता था, जब तक वो थे, यही सिलसिला चला, अब उनके बेटे को कॉलेज की तरफ से जब भी बुलाया जाता है, वो यहीं आकर अपने काम को अंजाम देते है। अब वो तो नहीं है, उनका बेटा ही उनके काम को आगे बढ़ा रहा है। वो भी अपने पिता की

तरह ही बहुत ही सरल स्वभाव के और व्यवहारिक है। अपने पिता की तरह ही साजों की मरम्मत और ट्यूनिंग का काम भी बहुत मधुर करते है। (अरविंद)

डॉ. नीरा चौधुरी–''मैं जब से पटना आई हूँ तंत्री वाद्यों के लिए मैंने मोहनलाल जी का नाम ही सुना है। मैं अपनी माँ (छाया चौधुरी जो एक कुशल शास्त्रीय एवं ठुमरी गायिका थी) का तानपुरा, अपना खुद का तानपुरा तथा विभाग के सारे तंत्री वाद्यों की ट्यूनिंग एवं मरम्मत का काम उन्हीं से करवाती थी। पटना में तंत्री वाद्यों के लिए एकमात्र वही थे जो इतना सटीक काम करते थे। हर कलाकार के साज को उसके मन लायक काम करके उसे संतुष्ट कर देते थे। उनके जाने के बाद अब उनका बेटा उनके काम को आगे बढ़ा रहे हैं। (चौधरी)

डॉ. रीता दास–''मोहन लाल जी जब पटना आए तो मेरे पिता जी से उनकी भेंट हुई। मेरे पिता (डॉ. सी.एल. दास, जो मैहर घराने के एक कुशल सरोद वादक थे) इनके काम से बहुत प्रभावित हुए और तभी से इनके यहाँ अपने साज-बाज की मरम्मत का काम करवाने लगे। उन्हें शर्मा जी का काम इतना पसंद आया कि वो अपने साज का काम तो उनसे करवाते ही थे, अपने जान-पहचान वालों को भी उनके यहाँ जाने को बोलते थे। अब उनके बेटे उनके इस काम को पूरी ईमानदारी से आगे बढ़ा रहे है। (दास)

उपरोक्त सभी विद्वानों ने मोहनलाल के द्वारा तंत्री वाद्यों के निर्माण, उनकी सजावट एवं मरम्मत के काम को बखूबी सराहा। इनके द्वारा बनाए गए वाद्य यंत्र वादको के द्वारा बहुत पसंद किए जाते थे। देश ही नहीं विदेश में रहने वाले संगीत प्रेमी भी पसंद करते थे और उसे खरीदने के लिए पटना आते थे। देश के कोने-कोने से लोग इनके पास वाद्यों के क्रय तथा मरम्मत के लिए आते थे। मोहनलाल जी विशेषकर तंत्री वाद्यों के विशेषज्ञ के रूप में ही जाने जाते थे। इनकी दुकान पटना की तंग गलियों में होने के बावजूद भी अक्सर इनके यहाँ तत्कालीन सुप्रसिद्ध कलाकार अपने साज-बाज की मरम्मत के लिए आते थे, जिनमें पं. रविशंकर, विलायत खाँ, निखिल बनर्जी, अब्दुल हलीम जाफर खाँ इत्यादि प्रमुख थे। (राजेश)

मोहनलाल जी व्यवसायिक से कहीं ज्यादा व्यवहारिक थे। किसी भी कलाकार के आने पर पहले उनका उचित मान-सम्मान, आदर-सत्कार करते, उनका हालचाल पूछते, फिर किसी साउंड इंजीनियर की तरह उनसे उनके वाद्य के काम के बारे में पूछते थे। इसके बाद लग जाते थे पूरी लगन और मेहनत से अपने काम को अंजाम में। हर कलाकार के मनमुताविक उसके साज की मरम्मत करने में इनको महारत हासिल थी। अत्यन्त सहज, सुन्दर व्यक्तित्व होने के साथ ही वो एक कुशल सितार वादक भी थे। उनमें तंत्री वाद्यों के निर्माण की विलक्षण प्रतिभा थी। ये तंत्री वाद्यों के सिद्धस्थ वाद्य निर्माता थे ये तानपुरा, सितार, सरोद, गिटार इत्यादि वाद्य यंत्रों के निर्माण एवं मरम्मत का कार्य किया करते थे। इन्होंने सितार निर्माता के रूप मे अपनी अलग पहचान बनाई। ये हर शैली के सितार के निर्माण का कार्य किया करते थे जिनमें प्रमुखतः बनारस शैली, रविशंकर शैली, मुंडा शैली, निखिल बनर्जी शैली, विलायत खाँ शैली इत्यादि प्रमुख है। तरह-तरह के तंत्री वाद्यों को बनाना इनका पेशा था। जिसकी परंपरा आज भी चली आ रही है।

साज को संजीदा करने वाले मोहनलाल अब हमारे बीच नहीं है परंतु उनकी संगीतिक सेवा, सादगीपन, उनके नेक विचार, अपने काम के प्रति समर्पित भाव हमेशा अविस्मरणीय रहेंगे। उनके जाने के बाद उनके पुत्र राजेश शर्मा इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे है। अपने पिता की तरह ही राजेश भी व्यवहार कुशल एवं सिद्धहस्त तंत्री वाद्यों के निर्माता है। साथ ही एक कुशल सितारवादक भी है। जो वर्तमान में पटना सिटी तथा बनारस में अपने काम को आगे बढ़ा रहे है। पटना ही नहीं पटना से बाहर भी इनके काम को बहुत पसंद किया जाता है। इनके द्वारा बनाए हुए वाद्यों को भी देश ही नहीं विदेशी कलाकार भी पसंद करते है और आकर खरीदकर ले जाते है।

निष्कर्षतः हम देखते हैं कि वाद्य निर्माताओं को सिर्फ वही लोग जानते है जो लोग उनसे परिचित है अथवा जो लोग अपने साज-बाज का कार्य उनसे करवाते है। वाद्यों में प्राण फूँककर आत्मा भरने वाले वाद्य निर्माताओं को बहुत कम लोग ही जानते है, अगर कोई जानता भी है तो उनको उतनी तबज्जों नहीं देता है। उनके कार्यक्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु सरकार की ओर से तथा विभिन्न संगीत संस्थानों की ओर से कुछ जरूरी कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। जैसे विद्यालय एवं महाविद्यालयों में वाद्य निर्माण के डिप्लोमा कोर्स चलाए जाने चाहिए जिससे छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषय का चुनाव कर लाभान्वित हो सके। संगीत कार्यक्रमों के आयोजन में आयोजक तथा संगीत कलाकारों के नाम के साथ ही, उस संगीत कार्यक्रम में प्रयुक्त हो रहे वाद्य यंत्र, के निर्माता का नाम भी प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित होना चाहिए तथा संगीत कलाकारों की तरह ही वाद्य निर्माताओं को भी पुरुष्कृत करना चाहिए जिससे उन्हें समाज में यथोचित मान-सम्मान और प्रसिद्धि मिल सके। इससे वाद्य निर्माता प्रोत्साहित होकर गर्वान्वित महसूस करते हुए अपने कार्य को निरंतर प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ा सकेंगे। इस प्रकार के सार्थक प्रयास से निश्चित ही हमारी प्राचीन विलुप्त हो रही वाद्य निर्माण कला की परंपरा तो जीवित रहेगी ही साथ ही इस परंपरा को आगे बढ़ाने वाली नवीन पीढ़ी भी इससे लाभान्वित हो सकेगी और इस कला का प्रचार-प्रसार करते हुए विकास के पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

राजेश कुमार, तंत्री वाद्यों के निर्माता, पटना, साक्षात्कारः सारिका पटेल, 11/03/2022

चैटर्जी कुमार आशीष (सितार वादक) आकाशवाणी दूरदर्शन बी हाई-ग्रेड कलाकार, पटना, साक्षात्कार : सारिका पटेल, 03/11/2022

सहाय रीना, संगीत विभाग, श्री अरविंद महिला कॉलेज, पटना, साक्षात्कार : सारिका पटेल, 01/08/2023

अरविन्द कुमार, संगीत विभाग, मगध महिला कॉलेज, पटना, साक्षात्कारः सारिका पटेल, 30/05/2023

चौधुरी नीरा, संगीत विभाग, मगध महिला कॉलेज, पटना, साक्षात्कार : सारिका पटेल, 30/11/2022

दास रीता, संगीत विभाग, पटना वूमेंस कॉलेज, पटना, साक्षात्कार : सारिका पटेल 09/10/2023

राजेश कुमार, तंत्री वाद्यों के निर्माता, पटना, साक्षात्कार : सारिका पटेल, 11/03/2022

छायाचित्र

राधा कृष्ण शर्मा

राजेश शर्मा

मोहनलाल शर्मा

पटना में स्थिति कारखाना